अध्याय
06

भक्ति-सूफी परंपराएँ
धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ
(लगभग आठवीं से अठारहवीं सदी तक)

(लगभग 8वीं से 18 वीं सदी तक)

सीखने का प्रतिफल

इस अध्याय में हम भक्ति एवं सूफी आंदोलन के बारे में पढ़ेंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत कैसे हुई और किन परिस्थितियों में हुई। साथ ही यह भी जानेंगे कि इस आंदोलन का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा।

8वी से 18वीं शताब्दी के मध्य भारत में अनेक धार्मिक परंपराओं का विकास हुआ। दक्षिण भारत के तमिलनाडु से भक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई। कर्नाटक तथा गुजरात के रास्ते उत्तर भारत में प्रवेश किया। उत्तर भारत में जहां रामानंद ने सगुण परंपरा को जन्म दिया। वही कबीर तथा गुरु नानक ने निर्गुण परंपरा को आगे बढ़ाया। भक्ति की इन परंपराओं ने धर्म की नई अवधारणा दी और सामाजिक असमानताओं को मिटाने तथा एक समन्वित समाज के निर्माण का प्रयास किया।

भक्ति आंदोलन

ईश्वर को पाने का एक मार्ग भक्ति है। जिसमें उपासक अपने आराध्य के प्रति स्वयं को समर्पित कर देता है। छठी शताब्दी में यह एक आंदोलन का रूप ले लेता है क्योंकि यह जन सामान्य के लिए भक्ति का सरल मार्ग था।

भक्ति आंदोलन

- अध्ययन के स्रोत
- पुरातात्विक
- साहित्यिक
- मंदिर
- स्तूप
- बिहार
- भवन
- पुराण
- भजनावली
- जीवनी
- संतो के विचारों का कविता रूप में संकलन

© JCERT
not to be republished

भक्ति आंदोलन को प्रभावित करने वाले कारक

- भक्ति आंदोलन के कारण।
- बौद्ध एवं जैन धर्म द्वारा वैदिक धर्म को चुनौती।
- धार्मिक कर्मकांड से आम जन की समस्या।
- भारतीय समाज का धार्मिक एवं सामाजिक पतन।
- समकालीन सूफीवाद का प्रभाव।

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन

- दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन
- अलवार
- नयनार
- विष्णु के उपासक
- शिव के उपासक
- प्रमुख संत-तिरुमलाई, तिरुमंगाई, नामलवार ,अंडाल (महिला)
- प्रमुख संत-कराईकाल, अम्मइयार, अप्पर, संबंदर, सुंदरार

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन

छठी शताब्दी में दक्षिण भारत के तमिलनाडु में भक्ति मार्ग के दो संप्रदाय का उदय हुआ। विष्णु के उपासक अलवार तथा शिव के उपासक नयनार कहलाए।

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन

- अलवार-नयनार संतों की उपलब्धियां।
- भक्ति आंदोलन को मजबूत किया।
- धार्मिक कर्मकांड और पुरोहितवाद पर प्रहार
- जाति व्यवस्था तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। महिलाओं को समानता का अधिकार।

नयनार संतो की प्रमुख रचना तेवरम है। 10वीं शताब्दी तक आते-आते 12 अल्वार संतो की रचनाओं का एक संकलन कर लिया गया जो “नलयिरादिव्यप्रबंधम”के नाम से जाना जाता है।

वीर शैव परंपरा

12वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में कर्नाटक में वीरशैव संप्रदाय का उदय हुआ।जिसका नेतृत्व बासवन्ना (1106 से 1168) नामक एक ब्राह्मण ने किया।

वीर शैव परंपरा

- वीरशैव लिंगायत की विशेषताएं।
- शिव की आराधना करते थे।
- ब्राह्मण वादी व्यवस्था के आलोचक थे।
- सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया

© JCERT not to be republished

भक्ति आंदोलन और राज्य

भक्ति आंदोलन के संतों ने भी बौद्ध एवं जैन धर्म की तरह राजाओं का संरक्षण प्राप्त करने का प्रयास किया और सफलता भी पाई।

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन की दो परंपरा प्रभावशाली थी। सगुण परंपरा और निर्गुण परंपरा। सगुणपरंपरा के संस्थापक रामानंद थे और निर्गुण परंपरा के संतो में कबीर अग्रणी थे।

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन

- उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन
- सगुण धारा
- निर्गुण धारा
- ईश्वर के भौतिक रूप की उपासना की जाती है।
- मूर्तिपूजा,तीर्थयात्रा,कीर्तन,नियम, ध्यान की प्रधानता है।
- जनसाधारण के लिए भक्ति का सरल मार्ग है।
- मुख्य संत-रामानंद,मीरा,तुलसी,सूरदास।
- ईश्वर निराकार है।
- बाहरी आडंबर का विरोध किया।
- मुख्य लक्ष्य आत्मा का परमात्मा से मेल है।
- मुख्य संत-कबीर,नानक,दादू दयाल।

उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन के संतों में कबीर और गुरु नानक का प्रमुख स्थान है। रामानंद, दादू दयाल,चैतन्य महाप्रभु, मीरा,सूरदास,तुलसीदास अन्य प्रमुख संत हैं।

- कबीर की जीवनी
- रामानंद के शिष्य और सुल्तान सिकंदर लोदी के समकालीन हैं।
- एक विधवा ब्राह्मणी के पुत्र।
- धर्म परिवर्तित मुसलमान नीरू जुलाहा के घर पालन पोषण हुआ।
- सांसारिक जीवन के साथ ही सन्यास मार्ग के लिए प्रोत्साहित किया।
- व्यंगात्मक दोहो और चुटकुलों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया।

- गुरु नानक की जीवनी।
- जन्म 1469 ई० में तलवंडी (पाकिस्तान) में हुआ।
- निर्गुण विचारधारा वाले संत
- धार्मिक आडंबर मूर्त पूजा,तीर्थ यात्रा, के विरोधी।
- जातिप्रथा,छुआछूत,लैंगिक असमानता के विरोधी
- सिख धर्म के संस्थापक।

मीराबाई-मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थी मेवाड़ के सिसोदिया कुल में विवाह हुआ। कृष्ण की उपासक थी। संत रैदास मीराबाई के गुरु थे। (बॉक्स में लिखें)

© JCERT not to be republished

कबीर तथा गुरुनानक के उपदेश

- ईश्वर एक है।
- ईश्वर निराकार ब्रह्म है
- मानव का प्रमुख लक्ष्य आत्मा से परमात्मा का मेल करना है।
- वाह्य आडंबर का विरोध किया।
- सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया।
- आर्थिक समानता पर जोर दिया।

भक्ति आंदोलन का महत्व एवं प्रभाव

- मूर्ति पूजा, धार्मिक आडंबर और बहुदेववाद का विरोध कर जनमानस को इससे छुटकारा दिलाया।
- धर्म पर ब्राह्मणों के प्रभुत्व को कम किया।
- सामाजिक कुरीति तथा भेदभाव को समाप्त किया।
- क्षेत्रीय भाषा तथा कला का विकास हुआ।
- हिंदू मुसलमान के बीच बढ़ती कटुता को कम किया।

भारत में इस्लाम का प्रचार

इस्लाम के आगमन के बाद जो परिवर्तन हुए उसने शासक वर्ग के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक समुदायों के साथ शिल्पी, योद्धा,व्यापारीवर्ग को भी प्रभावित किया। मुस्लिम शासकों ने इस्लामी कानून सरिया के नियमों में परिवर्तित कर गैर इस्लामी प्रजा के प्रति एक नई नीति निर्धारित की। इन्हें जिम्मी का दर्जा दिया गया और इन लोगों से जजिया कर वसूल कर अपना प्रजा बना लिया। इस प्रकार इस्लाम का प्रसार हुआ।

इस्लाम शासक के साथ ही भारत में मुस्लिम संत अर्थात सूफी संत भारत आए जिसने आम जन को सामाजिक और आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया।

इन सूफी संतों ने सिलसिला की परंपरा शुरू कर खानकाह को अपने कार्यकलाप का केंद्र बिंदु बनाया।

भारत में इस्लाम का प्रचार

- सूफी सिलसिला
- सूफी संतों का संस्थागत रूप
- प्रमुख सिलसिला
- चिश्ती
- सुहरावर्दी
- कादरी
- नक्शबंदी
- प्रमुख संत-मोइनुद्दीन चिश्ती (संस्थापक) निजामुद्दीन औलिया,बख्तियार काकी, शेख बुरहानुद्दीन (दक्षिण भारत)
- शहाबुद्दीनसुहरावर्द (संस्थापक), बहाउद्दीन जकारिया, हमीदुद्दीन नागोरी।
- अब्दुल कादिर जिलानी (संस्थापक)
- ख्वाजा मुहम्मद बकीबिल्लाह, शेख अहमद सरहिंदी।

© JCERT not to be republished

खानकाह

सूफी संतों पीर (गुरु) मुरीद (शिष्य) के गतिविधियों का केंद्र बिंदु

जमातखाना (अतिथि गृह)

लंगर (सामुदायिक रसोई)

सभा, जियारत, कव्वाली।

भक्ति आंदोलन के संतो के समान सूफी संतों ने भी अपना दर्शन दिया। जिसने आम जन को राहत पहुंचाया।

सूफी दर्शन

धार्मिक रहस्यवाद

कर्मकांड और कट्टरपंथी विचारों का विरोधी

एकेश्वरवाद की अवधारणा

ईश्वर से प्रियतमा (ईश्वर)और प्रेमी (उपासक)का संबंध।

नाच गान एवं कव्वाली के माध्यम से आराधना

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अमीर खुसरो का प्रमुख स्थान है। जिसने सूफी परंपराओं के बारे में कई रचनाएं दी और स्वयं सुखी परंपराओं से जुड़ा हुआ था।

अमीर खुसरो

कवि एवं संगीतज्ञ।

तबला और सितार वाद्य यंत्र का आविष्कारक।

कव्वाली के पहले कौल गायन का जनक।

निजामुद्दीन औलिया के अनुयायी।

सूफी संत और राज्य संबंध

सूफी संतों और राज्य के शासकों के बीच समय के साथ संबंधों में बदलाव होता रहा है। शुरुआत के सूफी संतो ने शासकों से किसी प्रकार के सहयोग नहीं प्राप्त करते थे।लेकिन बाद के संतो ने राज्य का संरक्षण प्राप्त किया था।

सूफी संत और राज्य संबंध

सूफी संत और राज्य संबंध

चिश्ती संत

सुहरावर्दी संत

राजकीय सहयोग को अस्वीकार किया।

राजकीय उपहार अस्वीकार।

सामान्यता सूफी संतों और राज्य (राजा) के बीच अच्छा संबंध रहा।

कभी कभी टकराव। (गयासुद्दीन तुगलक बनाम निजामुद्दीन औलिया) के बीच मतभेद।

राज्य और सूफी संतों के बीच घनिष्ठ संबंध था।

सूफी संतों को राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ।

सूफी संतों ने राज्य से आर्थिक सहायता प्राप्त किया।

© JCERT not to be republished

सूफियों की देन

भक्ति परंपरा के संतों के समान सूफी संतों ने भी भारतीय समाज को प्रमुख योगदान दिया।

सूफियों की देन

- सूफियों की देन
- हिंदू मुस्लिम एकता बढा।
- धार्मिक उदारता को बढ़ावा मिला।
- स्थानीय भाषा का विकास।
- हिंदू मुस्लिम संस्कृति के समन्वय का प्रयास किया।
- आम जन को ईश्वर प्राप्ति का सरल मार्ग प्रदान किया।

स्मरणीय तथ्य-

○ राजा और पुरोहित के धार्मिक व्यवहार और आचरण के नियमों का अनुसरण करने की प्रक्रिया को महान परंपरा कहा गया।

○ किसानों के द्वारा परंपरा का पालन करने को लघु परंपरा कहा गया।

○ वीरशैव मत में लिंग,गुरु और संगम पर विशेष बल दिया गया।

○ गुरु नानक के उपदेशों को "शबद" कहा जाता था।

○ आदि ग्रंथ साहिब का संकलन सिखों के पांचवें गुरु अर्जुन देव ने किया था।

○ मोइनुद्दीन चिश्ती गरीब नवाज का दरगाह अजमेर में है।

○ अकबर ने शेख सलीम चिश्ती के सम्मान में नई राजधानी फतेहपुर सीकरी में दरगाह का निर्माण करवाया था।

○ संतों की दरगाह पर प्रत्येक साल उनके मुरीदो(शिष्यों)द्वारा उत्सव मनाना उर्स कहलाता है।

○ 15 वीं शताब्दी में असम में शंकरदेव वैष्णव धर्म के मुख्य प्रचारक थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. गुरु नानक देव का जन्म कब हुआ था।

   a. 1469। b. 1530
   c. 1526 d. 1820

2. खालसा पंथ की स्थापना किसने किया था।

   a. कबीर
   b. गुरुनानक
   c. गोविंद सिंह।
   d. उपरोक्त कोई नहीं

3. बीजक किसकी रचना मानी जाती है।

   a. सूरदास b. कबीर दास
   c. तुलसीदास d. मीराबाई

4. मीराबाई के गुरु कौन थे?

   a. रैदास b. दादू दयाल
   c. नामदेव d. मलूक दास

6. मोइनुद्दीन चिश्ती का दरगाह कहां है?

   a. दिल्ली में b. जयपुर में
   c. लाहौर में d. अजमेर में

© JCERT not to be republished

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकार क्या अर्थ निकालते हैं?

उत्तर-संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकारों का अभिप्राय पूजा प्रणालियों से है। इतिहासकारों के अनुसार यहां दो प्रक्रिया चल रही थी। इसका प्रसार पौराणिक ग्रंथों की रचना और संकलन द्वारा हुआ है। यह ग्रंथ सरल संस्कृत छंदों में है जो वैदिक विद्या से विहीन स्त्रियों और शुद्र द्वारा भी ग्राह्य थे।

दूसरी परंपरा शूद्र स्त्रियों व अन्य सामाजिक वर्गों के बीच स्थानीय स्तर पर विकसित हुई प्रणालियों पर आधारित थी। इन दोनों परंपराओं के संपर्क में आने से एक दूसरे में मेल- मिलाप हुआ। इसी मेल- मिलाप को समाज की गंगा जमुनी संस्कृति के रूप में देखते हैं। इसमें ब्राह्मण ग्रंथ में शूद्र व अन्य वर्गों के आस्थाओं को स्वीकृति मिली। दूसरी ओर समान लोगों ने कुछ सीमा तक ब्रह्मणवादी परंपरा को स्थानीय विश्वास परंपरा में शामिल कर लिया। इस प्रक्रिया का सबसे विशेष उदाहरण पूरी उड़ीसा में मिलता है जहां मुख्य देवता को 12वीं शताब्दी तक आते-आते विष्णु के एक स्वरूप के रूप में प्रस्तुत किया गया।

प्रश्न 2. किस हद तक उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों का स्थापत्य स्थानीय परिपाटी कार सार्वभौमिक आदर्शों का सम्मिश्रण है

उत्तर-उपमहाद्वीप में विभिन्न मुस्लिम शासकों ने अनेक मस्जिदों का निर्माण करवाया था। इस्लाम का लोक प्रचलन जहां भाषा और साहित्य में देखने को मिल जाता है। वही यह छवि स्थापत्य कला के निर्माण में भी दिखाई पड़ता है। विशेष रूप से मस्जिद निर्माण कला में यह दृष्टिगोचर है। मस्जिद के कुछ स्थापत्य तत्व जैसे इमारत का मक्का की ओर संकेत करना, जो मेहराब तथा मीनार की स्थापना से लक्षित होता था। परंतु बहुत से ऐसे तत्व भी थे जिनमें भिन्नता पाई जाती थी। जैसे छत की स्थिति, सज्जा के तरीके तथा स्तंभ बनाने की विधि। उदाहरण के लिए 13वीं शताब्दी में केरल में बनी एक मस्जिद की छत मंदिर के शिखर से मिलती-जुलती है।

प्रश्न. 3 बे-शरिया और बा-शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता और अंतर दोनों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-शरिया मुसलमानों के लिए बनाया गया कानून है। यह कुरान शरीफ और हदीस पर आधारित है। शरिया का पालन करने वाले को बा शरिया और शरिया की अवहेलना करने वाले को बे शरिया कहा जाता था।

समानता-

1. बा- शरिया और बे- शरिया दोनों इस्लाम धर्म से संबंधित थे।

2. दोनों ही अल्लाह में विश्वास रखते हैं। उनके अनुसार अल्लाह एकमात्र ईश्वर है जो सर्वशक्तिशाली और सर्वव्यापक है।

3. दोनों ही अल्लाह के सम्मुख पूर्ण आत्मसमर्पण का भाव रखते हैं।

4. दोनों की एकरूपता इस बात में भी थी कि दोनों सूफी आंदोलन से संबंध रखते थे।

अंतर-

1. बा- शरिया सूफी खानकाओं में रहते थे। जबकि बे- शरिया सूफी खानकाह का तिरस्कार करके फकीर की जिंदगी व्यतीत करते थे।

2. बा- शरिया सिलसिले शरिया का पालन करते थे किंतु बे- शरिया शरिया में बंधे हुए नहीं थे।

© JCERT not to be republished

प्रश्न4. चर्चा कीजिए कि अलवार, नयनार और वीरशैव ने किस प्रकार जाति प्रथा की आलोचना प्रस्तुत की?

उत्तर-अलवार और नयनार दक्षिण भारत के तमिल नाडु में भक्ति आंदोलन की धारा थी। वीरशैव कर्नाटक से संबंध रखते थे इन सभी ने जाति प्रथा के बंधनों का अपने अपने ढंग से विरोध किया।

1. अलवार और नयनार संतो ने जाति प्रथा, सामाजिक कुरीति तथा ब्राह्मणों की प्रभुता का विरोध किया।

2. कुछ हद तक यह बात सत्य प्रतीत होता है कि भक्ति संत विभिन्न समुदायों से थे। जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान और कुछ तो उन जातियों से आए थे जिन्हें अस्पृश्य माना जाता था।

3. वीरशैवो ने भी जाति प्रथा का विरोध किया। उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांतों को मानने से इनकार कर दिया। उनके अनुसार जाति के आधार पर कोई भी व्यक्ति ऊंचा नीचा या भेदभाव करने के योग्य नहीं हो सकता है। क्योंकि ईश्वर ने जन्म से किसी के साथ भेदभाव नहीं किया है।

प्रश्न 5 कबीर अथवा बाबा गुरुनानक के मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिए। इन उपदेशों का किस तरह संप्रेषण हुआ?

उत्तर-कबीर के अनुसार संसार का मालिक एक है जो निराकार ब्रह्म है। वह राम और रहीम को एक ही मानते थे। उनका कहना था कि विभिन्नता तो केवल शब्दों में है वास्तव में ईश्वर और अल्लाह एक ही है। वह वेदांत दर्शन से प्रभावित थे और सख्त को अलग, निराकार ब्रह्म कह कर संबोधित करते थे।

बाबा गुरु नानक ने भी कबीर की तरह निराकार ब्रह्म की अवधारणा दी। उन्होंने यज्ञ, मूर्ति पूजा और कठोर तप जैसे बाहरी आडंबर का विरोध किया। हिंदू और मुसलमानों के धर्म ग्रंथों को भी उन्होंने नकार दिया। गुरु नानक के अनुसार ईश्वर का कोई आकार नहीं होता। उन्होंने रब (ईश्वर) का निरंतर स्मरण व नाम जाप को उपासना का आधार बताया। उन्होंने संगत के नियम निर्धारित किए। जहां सामूहिक रूप से पाठ होता था। उन्होंने पद परंपरा की भी शुरुआत की। जहां कबीर ने अपने उपदेशों में क्षेत्रीय भाषा का इस्तेमाल किया। वहीं गुरु नानक ने अपने विचार पंजाबी भाषा में व्यक्त किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सूफी मत के मुख्य धार्मिक विश्वासों और आचारो की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-भारत में अरब क्षेत्र से आए आध्यात्मिक संतों का झुकाव रहस्यवाद और वैराग्य की ओर था। इन लोगों को सूफी कहा जाता था। सूफी मत के मुख्य धार्मिक विश्वासों और आचारो का वर्णन इस प्रकार है।

इस्लाम के आरंभिक शताब्दियों में धार्मिक तथा राजनीतिक संस्था के रूप में खिलाफत की बढ़ती शक्ति के विरुद्ध कुछ आध्यात्मिक लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की तरफ झुकाव बढा। जिन्हें सूफी कहा जाता था। सूफियों ने रूढ़िवादी परिभाषा और धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया। उन्होंने मोहम्मद साहब को इंसा-ए कामिल बताया। और उनका अनुसरण करने की सीख दी। सूफियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर किया।

सूफियों द्वारा आध्यात्मिक व्यवहार के नियम निर्धारित करने के अलावा खानकाह में रहने वालों के बीच संबंध और शेख व जनसामान्य के बीच के रिश्तो की सीमा भी नियत करते थे।

© JCERT not to be republished

12वीं शताब्दी के आसपास इस्लामी दुनिया में सूफी सिलसिले का गठन होने लगा। सूफी संत अपने मुरीदो को दीक्षा प्रदान करते थे। दीक्षा के विशिष्ट अनुसंधान विकसित किया गया था। जिसमें दीक्षित को निष्ठा का वचन देना होता था। पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदो के लिए भक्ति का स्थल बन जाता था। इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की खास तौर से उनकी बरसी के अवसर पर परिपाटी चली हुई थी। जिसे उर्स कहा जाता था।

लोग अध्यात्मिक और अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए उनका आशीर्वाद लेने जाते थे। कुछ रहस्यवादी सूफी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नए आंदोलनों की नींव रखी। खानकाह का तिरस्कार करके कुछ सूफी संत फकीर की जिंदगी बिताते थे। निर्धनता और ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। शरिया की अवहेलना करने के कारण वे शरिया कहलाते थे। इस तरह उन्हें सरिया का पालन करने वाले बा-शरिया सूफियों से अलग करके देखा जाता था।

प्रश्न 2.-क्यों और किस तरह शासकों नयनार और सूफी संतों से अपने संबंध बनाने का प्रयास किया?

उत्तर-चोल शासकों ने नयनार संतो के साथ संबंध बनाने पर बल दिया और उनका समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया अपने राजत्व के पद को देवी स्वरूप प्रदान करने के लिए तथा अपनी सत्ता के प्रदर्शन के लिए चोल शासकों ने सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया और उन में पत्थर और धातु से बनी मूर्तियां स्थापित करवाई। चोल शासकों ने तमिल भाषा के शायद भजनों का गायन मंदिरों में प्रचलित करवाया

परांतक प्रथम ने संत कवि अपार संबंदर और सुंदरार आन की प्रतिमाएं एक शिव मंदिर में स्थापित करवाई इन मूर्तियों को मात्र उत्सव के दौरान निकाला जाता था सूफी संत समान रूप से सत्ता से दूर रहते थे किंतु कभी कोई शासक बिना मांगे अनुदान या भीड़ देता था तो वे उसे स्वीकार कर लेते थे कई मुस्लिम शासकों ने खानकाओं को कर मुक्त भूमि दे दी थी और दान संबंधी न्यास स्थापित किया था सूफी संत अनुदान में मिले धन और सामान का उपयोग जरूरतमंदों के खाने कपड़े रहने की व्यवस्था तथा अनुष्ठानों के लिए किया करते थे। शासक हमेशा यह प्रयास करते थे कि इन लोकप्रिय संतों का समर्थन प्राप्त होता रहे।

दिल्ली सल्तनत के सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा गैर इस्लामी है। इसलिए इन सुल्तानों ने सूफी संतों का सहारा लिया। जो अपने आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उदभूत मानते थे। ऐसा माना जाता था कि सूफी संत मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की आध्यात्मिक और ऐहिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते थे।

प्रश्न 3. उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए कि क्यों भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया?

उत्तर-भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया वास्तव में भक्ति और सूफी चिंतक देश के विभिन्न भागों से संबंधित थे वह किसी भाषा विशेष को पवित्र नहीं मानते थे उनका प्रमुख उद्देश्य सामान को मानसिक शांति और मानसिक शांति प्रदान करना था वह अपने विचारों को जनसामान्य तक अपनी भाषाओं में सरलता पूर्वक पहचान पहुंचाना चाहते थे यही कारण था कि उन्होंने अपने उपदेशों को स्थानीय भाषाओं में व्यक्त किया

अलवार और नयनार संत विभिन्न जातियों से संबंधित थे। जैसे कुछ संत ब्राह्मण किसान

© JCERT not to be republished

शिल्पकार तथा अस्पृश्य जातियों से संबंध रखते थे। उन्होंने ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत प्रेम और भक्ति के संदेश को स्थानीय भाषाओं द्वारा दक्षिण भारत में फैलाया। अलवर संतो के एक मुख्य काव्य संकलन "नलयिरादिव्य प्रबंधम "को तमिल वेद कहा जाता है।

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के प्रमुख प्रचारक ने भी विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया। उदाहरण के लिए कबीर ने अपने पदों को अवधी भाषा में, तो गुरु नानक ने पंजाबी भाषा में व्यक्त किया। इसके अलावा हिंदी फारसी भाषाओं का भी प्रयोग संतों ने किया। कबीर की कुछ रचनाएं उलटबांसी के नाम से प्रसिद्ध है। कबीर के अनेक पदों का संकलन सिखों के आदि ग्रंथ साहिब में किया गया है। इसके अलावा बाबा फरीद, संत रविदास जैसे संतों की वाणी को संकलित किया गया। मीराबाई ने अपने मन की भावना को गीतों में व्यक्त किया जो ब्रज भाषा में था और कुछ राजस्थानी तथा गुजराती भाषा में लिखे गए थे। चिश्ती संतों की एक महत्वपूर्ण विशेषता स्थानीय भाषाओं को अपनाना था। विश्वा में स्थानीय भाषा का प्रयोग करते थे दिल्ली में चिश्ती सिलसिला के लोग आपस में हिंदी में बातचीत करते थे कुछ अंशु क्यों ने ईश्वर के प्रति प्रेम को मानवीय पीएम के रूपक द्वारा व्यक्त करने के लिए लंबी-लंबी कविताओं की रचना की थी जिन्हें मशीनरी के नाम से जाना जाता है सूफी कविता फारसी हिंदवी अथवा उर्दू में होती थी दक्षिण भारत में बीजापुर में दक्षिणी भाषा का प्रयोग किया गया

स्थानीय भाषा के प्रयोग का मूल कारण था कि आमजन स्थानीय भाषा में ही सरलता पूर्वक बातों को समझ सकते थे।

प्रश्न 4 इस अध्याय में प्रयुक्त किन्ही 5 स्रोतों का अध्ययन कीजिए और उनमें निहित सामाजिक व धार्मिक विचारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-इस अभियान में प्रयुक्त मुख्य पांच स्रोत इस प्रकार हैं।

लोकधारा-भक्ति व सूफी संतों की जानकारी के लिए मूर्तिकला स्थापत्य कला एवं धर्म गुरुओं के संदेशों का प्रयोग किया गया है इस प्रकार अनेक अनुयायियों द्वारा रचित गीत काव्य जीवन इत्यादि भी प्रयोग में लाई गई है सामाजिक धार्मिक दृष्टि से इन्हें इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि जनमानस उसमें विश्वास कर सके और उससे प्रेरणा ले सकें।

कश्फ -उल- महजूब-यह सुफी विचारों और आचारों पर प्रबंध पुस्तिका है यह पुस्तक अबुल हसन अल हुजविरी द्वारा लिखी गई है इतिहासकारों को को यह जानने में मदद करता है की उपमहाद्वीप के बाहर भी परंपराओं ने भारत में सूफी चिंतन को किस तरह प्रभावित किया

मक्तूबाद-ये वे पत्र थे जो सूफी संतों द्वारा अपने अनुयायियों और सहयोगियों के लिए लिखे गए थे। इन पत्रों से धार्मिक सत्य के बारे में शेख के अनुभवों का वर्णन मिलता है। अहमद सरहिंदी के लिखें पत्र मकतूबात-ए-इमाम रब्बानी में संकलित है।

तजकिरा-भारत में लिखा पहला सूफी तजकिरा मीर खुर्द किरमानी का सियार उल औलिया है। यह मुख्यतः चिश्ती संतो के बारे में था। सबसे प्रसिद्ध तजकिरा देहलवी का अंबार- उल अखयार है। तजकिरा के लेखों का मुख्य उद्देश्य अपने सिलसिले की प्रधानता स्थापित करना तथा साथ ही अपनी आध्यात्मिक वंशावली की महिमा का बखान करना था।

© JCERT not to be republished

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत कहां से हुई।

प्रश्न2. चार अलवार संतों के नाम लिखें।

प्रश्न3. वीरशैव लिंगायत संप्रदाय के बारे में लिखें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1.भक्ति आंदोलन को प्रभावित करने वाले कौन-कौन से कारक है।

प्रश्न2. कबीर की जीवनी संक्षेप में लिखें।

© JCERT not to be republished